होम विधान (कुश कंडिका सहित)

संकलनकर्ता

विद्या वारिधि आ० दीनदयाल मणि त्रिपाठी

कुशकण्डिकाविधान[1]

पंच भू संस्कार

हवनके लिये जो वेदी बनायी जाती है, उसे शुद्ध एवं पवित्र करनेके लिये तथा उसमें अग्नि स्थापित करने के लिये उसका संस्कार किया जाता है, जो पाँच प्रकारसे होता है, इसे पंच- भूसंस्कार कहते हैं। इन पाँच संस्कारों के नाम इस प्रकार हैं-**१.परिसमूहन, २. उपलेपन, ३.उल्लेखन या रेखाकरण, ४ .उद्धरण तथा (५)अभ्युक्षण या सेचन।**

१.परिसमूहन-

वेदीमें कोई कृमि, कीट आदि न रह जाय अत: उसके निवारणके लिये तीन कुशों के द्वारा दक्षिणसे उत्तरकी ओर वेदी को साफ करे और उन कुशों को ईशानकोणमें फेंक दे **(त्रिभिर्दर्भै: परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य)**

२. उपलेपन-

पुराकालमें इन्द्रने वृत्र नामक महान् असुरका वध किया था। उस वृत्रासुरके मेद (चर्बी) -से यह पृथ्वी व्याप्त हो गयी। अत: मेदयुक्त भूमिका संस्कार उपलेपन कहलाता है। इसके लिये गायके गोबर तथा जलसे वेदीको लीपना चाहिये। **(गोमयोदकेनोपलिप्य)**

(३) उल्लेखन या रेखाकरण-

स्रुवा के मूलसे वेदीके मध्य भागमें प्रादेशमात्र (अंगूठेसे तर्जनी के बीचकी दूरी) लम्बी तीन रेखाएँ पश्चिमसे पूर्वकी आर खींचे। रेखा खींचनेका क्रम दक्षिणसे प्रारम्भकर उत्तरकी ओर होना चाहिये। यह क्रिया उल्लेखन या रेखाकरण कहलाती है। **(स्फ्येन, स्रुवमूलेनकुशमूलेन वा त्रिरुल्लिख्य)**

(४) उद्धरण-

उन खींची गयी तीनों रेखाओंसे उल्लेखन-क्रमसे अनामिका तथा अंगुष्ठके द्वारा थोड़ी-थोड़ी मिट्टी निकालकर बायें हाथमें रखता जाय। बादमें सब मिट्टी दाहिने हाथपर

रखकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। यह क्रिया उद्धरण कहलाती है। **(अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुदधृत्य)**

(५) अभ्युक्षण या सेचन[२] -
तदनन्तर गंगा आदि पवित्र नदियोंके जलके छींटोंसे वेदीको पवित्र करना चाहिये। यह क्रिया अभ्युक्षण या सेचन कहलाती है। **(जलेनाभ्युक्ष्य)**

वेदीके पंच-संस्कार करनेके अनन्तर **कुशकण्डिका विधान की प्रधान क्रिया** करनी चाहिये जिसमें प्राय: अग्नि-स्थापनसे आहुति प्रदान करनेतककी क्रियाएँ आती **आघार** और **आज्यभाग** नामवाली चार है। सामान्यरूप से उस प्रक्रिया को भी यहाँ दिया जा रहा है

सर्वप्रथम संस्कारित वेदी में अग्निकी स्थापना करनी चाहिये। बड़े यज्ञ-यागादिमें प्राय: अरणि-मन्थनद्वारा अग्निका प्राकट्य किया जाता है। अन्यत्र प्राय: कपूर आदिको प्रज्वलित कर अग्नि स्थापित की जाती है। समिधाएँ (यज्ञीय काष्ठ) पलाश आदिकी होनी चाहिये। उन यज्ञीय काष्ठमें कोई कीड़े-मकोड़े प्रविष्ट न हों, यह देख लेना चाहिये अन्यथा जीवहिंसा होगी । ये काष्ठ सूखे होने चाहिये। अग्निप्रज्वालनके लिये गायके गोबरके सूखे कण्डे का भी प्रयोग होता है।

अग्नि-स्थापन

किसी कांस्य अथवा ताम्रपात्रमें या नये मिट्टीके पात्र (कसोरे) में स्थित पवित्र अग्निको वेदीके अग्निकोणमें रखे और इस अग्निमें से क्रव्यादांश निकालकर नैतृत्यकोण में डाल दे। तदनन्तर अग्निपात्र को स्वाभिमुख करते हुए वेदीमें स्थापित करे। उस समय यह मन्त्र पढ़े-
ॐ अग्निंदूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवां२ आ सादयादिह ॥

जिस पात्र में अग्नि लायी गयी है उस पात्र , अक्षत के साथ जल छिड़क दे। अग्निकी सुरक्षा के लिये कुछ इन्धन डाल दे। अग्नि को मुख से फ़ूकना पड़े तो मुख और अग्नि के बीच में बांस नली तृण या काष्ठ का व्यवधान अवश्य कर ले । गन्ध अक्षत पुष्पादि उपचारों से संक्षिप्त अग्निपूजन कर ले।

आचार्य तथा ब्रह्मा का वरण

यज्ञकी रक्षा करनेवाले ब्राह्मणकों ब्रह्मा कहा जाता है। यदि प्रत्यक्ष ब्रह्मा का वरण न करना हो तो पचास कुशों से निर्मित कुशब्रह्मा[३]’ का अग्निके उत्तर दिशामें संकल्पपूर्वक

वरण करके फिर उन्हें पूर्वकी ओर से लाकर दक्षिण दिशामें उपकल्पित आसनपर उत्तराभिमुख स्थापित करे। ब्रह्मा का स्थान अग्नि के दक्षिण दिशा में होता है। हवनके लिये पृथक् आचार्य हों तो पहले उनका संकल्पपूर्वक वरण कर ले और वरण सामग्री प्रदान करे।

प्रणीता पात्र स्थापन

इसके बाद आचार्य (होता) ब्रह्माके आदेशसे अग्नि (वेदी) के उत्तरभाग मे प्रादेशमान दूरी छोड़कर पत्तों या कुशों के दो आसन रखें[४]। कुशका अग्रभाग पूर्वकी ओर हो, चतुष्कोण प्रणीतापात्रको बायें हाथमें रखकर दाहिने हाथमें स्थित कर्मपात्रस्थ जलसे उसे भर दे[५] और कुशोंसे ढककर ब्रह्माके मुखका अवलोकन कर पहले पश्चिमवाले पते (कुश) के आसनपर रखकर, उठाकर फिर पूर्ववाले आसनपर रख दे।[६]

अग्नि (वेदी) के चारों ओर कुश-आच्छादन (कुशपरिस्तरण)[७] -

इक्यासी कुशों को ले।[८] उनके बीस-बीसके चार भाग करे। इन्हीं चार भागोंको अग्निके चारों ओर फैलाया जाता है। इसमें ध्यान देनेकी बात यह है कि कुशसे हाथ खाली नहीं रहना चाहिये। प्रत्येक भाग फैलाने पर हाथमें एक कुश बचा रहेगा। इसलिये प्रथम बारमें इक्कीस कुश लिये जाते हैं। वेदीके चारों ओर कुश बिछानेका क्रम इस प्रकार है

-कुशका प्रथम भाग (२०+१ = २१) लेकर पहले वेदी के अग्निकोणसे प्रारम्भकर ईशानकोण तक उन्हें उत्तराग्र बिछाये। फिर दूसरे भागको ब्रह्मासन से अग्निकोणतक पूर्वाग्र बिछाये। तदनन्तर तीसरे भागको नैऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र बिछाये और चौथे भागको वायव्यकोणसे ईशानकोणतक पूर्वाग्र बिछाये। पुन: दाहिने खाली हाथसे वेदी के ईशानकोण से प्रारम्भकर वामावर्त ईशानपर्यन्त प्रदक्षिणा करे।

पात्रासादन

हवनकार्यमें प्रयोक्तव्य सभी वस्तुओं तथा पात्रों यथा समूल तीन कुश उत्तराग्र (पवित्र बनानेवाली पत्तियोंको काटनेके लिये), साग्र दो कुशपत्र (बीचवाली सीक निकालकर पवित्रक बनानेके लिये), प्रोक्षणीपात्र (अभाव में दोना या मिट्टीका कसोरा), आज्यस्थाली (घी रखनेका पात्र), चरुपात्रके रूपमें मिट्टी कें दो पात्र (यदि एक ही पात्रमें बनाना हो तो वह बड़ा रहना चाहिये), पाँच सम्मार्जन कुश, सात उपयमन कुश, तीन समिधाएँ (प्रादेशमात्र लम्बी), स्रुवा , आज्य (घृत), यज्ञीय काष्ठ (पलाश आदिकी लकड़ी), २५६ मुट्ठी चावलसे भरे पूर्णपात्र आदिको पश्चिम से पूर्व तक उत्तराग्र अथवा अग्निके उत्तरकी ओर पूर्वाग्र रख ले है,

पवित्रकनिर्माण-

दो कुशोंके पत्रोंको बायें हाथमें पूर्वाग्र रखकर इनके ऊपर उत्तराग्र तीन कुशोंको दायें हाथसे प्रादेशमात्र दूरी छोड़कर मूलकी तरफ रख दे। तदनन्तर दो कुशोंके मूलको पकड़कर कुशत्रय को बीचमें लेते हुए दो कुशपत्रों को प्रदक्षिणक्रम से लपेट ले, फिर दायें हाथसे तीन कुशों को मोड़कर बायें हाथसे पकड़ ले तथा दाहिने हाथसे कुशपत्रद्वय पकड़कर जोर से खींच ले। जब दो पत्तोंवाला कुश कट जाय तब उसके अग्रभागवाला प्रादेशमात्र दाहिनी ओरसे घुमाकर गाँठ दे दे ताकि दो पत्र अलगअलग न हों। इस तरह पवित्रक बन गया। शेष सबको (दो पत्रोंके कटे भाग तथा काटनेवाले तीनों कुशोंको) उत्तर दिशामें फेंक दे।[९]

पवित्रकके कार्य तथा प्रोक्षणीपात्र का संस्कार -

पूर्वस्थापित प्रोक्षणीको अपने सामने पूर्वाग्र रखे। प्रणीतामें रखे जलका आधा भाग आचमनी आदि किसी पात्र द्वारा प्रोक्षणीपात्र में तीन बार डाले। अब पवित्री के अग्रभागको बायें हाथकी अनामिका तथा अंगुष्ठसे और मूलभागको दाहिने हाथकी अनामिका तथा अंगुष्ठसे पकड़कर इसके मध्यभागके द्वारा प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले **(उत्प्लवन)**। पवित्रक को प्रोक्षणीपात्र में पूर्वाग्र रख दे। प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथमें रख ले। पुन: पवित्रकके द्वारा प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको प्रोक्षित करे। तदनन्तर इसी प्रोक्षणीके जलसे आज्यस्थाली स्रुवा आदि सभी सामग्रियों तथा पदार्थों का प्रोक्षण करे अर्थात् उनपर जलके छींटे डाले **(अर्थवत्प्रोक्ष्य)**। इसके बाद उस प्रोक्षणीपात्रको प्रणीतापात्र तथा अग्निके मध्यस्थान (असंचरदेश) में पूर्वाग्र रख दे।

घृतको पात्र (आज्यस्थाली)-में निकालना-

आज्यपात्रसे घीको कटोरेमें निकालकर उस पात्रको वेदीके दक्षिणभागमें अग्निपर रख दे ।

चरु निर्माण-

बड़े कसोरेके बीचमें जौका आटा गूंथकर दीवार-जैसा बना दे।[१०] इसके बाद एक भागमें दूध तथा जौका आटा मिलाकर रख दे। दूसरे भागमें दूध तथा दो बार धुले हुए चावल[११] मिलाकर रख दे। तदनन्तर इस पात्रको अग्नि पर उत्तर घृतपात्रसे उत्तर भागमें रख दे। खूब चलाकर पकाये। खूब गाढ़ा होना चाहिये। दोनों भागके चरुओं को चलानेके लिये दो अलग-अलग लकड़ियाँ होनी चाहिये।

पर्यग्निकरण-

कुश या किसी लकड़ीको अग्निमें जलाकर दाहिने हाथसे पकड़कर पायस तथा घी के ईशानभाग से प्रारम्भ कर ईशानभाग तक दाहिनी ओरसे घुमाये । इस जलती लकड़ीको अग्निमें छोड़ दे। फिर खाली हाथको बायीं ओर से ईशानभाग से घुमाना प्रारम्भ कर ईशानभाग तक ले आये।

स्रुवा का सम्मार्जन-

जब घी आधा पिघल जाय तब दायें हाथमें स्रुवाको पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आग पर तपाये। पुन: स्रुवाको बायें हाथमें पूर्वाग्र ऊर्ध्वमुख रखकर दायें हाथसे सम्मार्जन कुशके अग्रभाग से स्रुवाके अग्रभागका, कुशके मध्यभागसे स्रुवाके मध्यभागका और कुशके मूलभागसे स्रुवाके मूलभाग का स्पर्श करे अर्थात् स्रुवाका सम्मार्जन करे। स्रुवाका प्रोक्षण करे। उसके बाद प्रणीताके जलसे सम्मार्जन कुशको अग्नि में डाल दे।

स्रुवा का पुनः प्रतपन-

अधोमुख स्रुवा को पुनः अग्नि में तपा कर दाहिनी ओर किसी पात्र , पत्ते या कुशों पर पूर्वाग्र रख दे

घृत पात्र तथा चरुपात्रका स्थापन-

घी के पात्रको अग्निसे उतारकर पायसके पश्चिम भागसे होते हुए पूर्वकी ओरसे परिक्रमा करके अग्नि(वेदी) -के पश्चिमभागमें उत्तरकी ओर रख दे। तदनन्तर पायस (चरु)-पात्र को भी अग्निसे उतारकर वेदी उत्तर रखे हुए आज्यस्थाली के पश्चिम से ले जाकर उत्तर भागमें रख दे।

घृत का उत्प्लवन

घृतपात्रको सामने रख ले। प्रोक्षणीमें रखी हुई पवित्रीको लेकर उसके मूलभागको दाहिने हाथके अंगुष्ठ अनामिकासे और बायें हाथके अंगुष्ठ तथा अनामिकासे पवित्रीके अग्रभागको पकड़कर कटोरेके घृत को तीन बार ऊपर उछाले घृत का अवलोकन करे और यदि घृतमें कोई विजातीय वस्तु हो तो निकालकर फेंक दे। तदनन्तर प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले और पवित्रीको पुन: प्रोक्षणीपात्रमें रख दे। स्रुवा से थोड़ा घी पायसमें डाल दे।

तीन समिधाओं की आहुति

ब्रह्माका स्पर्श करते हुए बायें हाथमें उपयमन (सात)- कुशोंको लेकर हृदयमें बायाँ हाथ सटाकर तीन समिधाओंको घी में डुबोकर मनसे प्रजापतिदेवता का ध्यान करते हुए खड़े होकर मौन[१२] हो अग्निमें डाल दे। तदनन्तर बैठ जाय।

पर्युक्षण (जलधारा देना)-

पवित्रकसहित प्रोक्षणीपात्र के जलको दक्षिण हाथकी अंजलिमें लेकर अग्नि के ईशानकोण से ईशानकोण तक प्रदक्षिणक्रम से जलधारा गिरा दे। पवित्रक को बायें हाथमें लेकर फिर दाहिने खाली हाथको उलटे अर्थात् ईशानकोणसे उत्तर होते हुए ईशानकोणतक ले आये **(इतरथावृत्ति:)** और पवित्रकको दायें हाथों लेकर प्रणीतामें पूर्वाग्र रख दे। तदनन्तर हवन करे।

हवन-विधि

सर्वप्रथम प्रजापतिदेवताके निमित्त आहुति दी जाती है। तदनन्तर इन्द्र, अग्नि तथा सोमदेवताको आहुति देनेका विधान है । इन चार आहुतियोंमें प्रथम दो आहुतियाँ **'आघार**' नामवाली हैं एवं तीसरी और चौथी आहुति **'आज्यभाग'** नामसे कही जाती है। ये चारों आहुतियाँ घी से देनी चाहिये। इन आहुतियोंको प्रदान करते समय ब्रह्मा कुशके द्वारा हवनकर्ता के दाहिने हाथका स्पर्श किये रहे, इस क्रियाको **'ब्रह्मणान्वारब्ध'** कहते हैं।

दाहिना घुटना पृथ्वीपर लगाकर स्रुवा में घी लेकर प्रजापतिदेवता का ध्यान कर निम्न मन्त्रका मन से उच्चारण कर प्रज्वलित अग्निमें आहुति दे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।
कहकर वेदी या कुण्डके मध्यभागमें आहुति दे।(स्रुवा से बचे घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।)
आगेकी तीन आहुतियाँ इस प्रकार बोलकर दे
(२) **ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम -** कहकर वेदी या कुण्डके मध्यभागमें आहुति दे। (स्रुवा में बचे घीको प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।)
(३) **ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम -** कहकर वेदी या कुण्डके उत्तरपूर्वार्धभाग में आहुति दे। (स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।)
(४) **ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम-** कहकर वेदी या कुण्डके दक्षिणपूर्वार्धभाग में आहुति दे। (स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्र में छोड़े।)

अब ब्रह्मा कुशका स्पर्श होता से हटा ले। तदनन्तर द्रव्यत्यागका संकल्प करे

द्रव्यत्याग

हाथमें जल लेकर इस प्रकार बोलकर जल छोड़ दे- **'अस्मिन् होमकर्मणि या: या: यक्षमाणदेवता ताभ्य: ताभ्य: इदं हवनीयद्रव्यं मया परित्यक्त ॐ तत्सद्यथादैवतमस्तु, न मम।'**

अग्निका ध्यान, आवाहन तथा पूजन

हाथमें पुष्प लेकर निम्न मन्त्रोंद्वारा अग्निका' ध्यान आवाहन करे-
सर्वतः पाणिपादं च सर्वतोऽक्षि शिरोमुख: । विश्वरूपो महानग्नि: प्रणीत: सर्वकर्मसु ॥
अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम् ॥
तदनन्तर गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि उपचारों से अग्निका पूजन करे और **वराहुति** प्रदान करे

तत : अग्ने सप्तजिह्वानां पूजयेत्

ॐ कनकायै नमः, ॐ रक्तायै नम :, ॐ कृष्णायै नमः, ॐ उद्गारिण्यै नमः, ॐ उत्तरमुखे सुप्रभायै नमः ॐ बहुरूपायै नमः, ॐ अतिरिक्तायै नमः ।

अथ पञ्चवारुण (प्रायश्चित्त)होम :

इसके बाद स्रुवा द्वारा घृत से प्रायश्चित्त संज्ञक पाँच आहुतियां प्रदान करें । जिसे पञ्चवारुणी कहते हैं ।

ॐ त्वन्नो अग्रे वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो भवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषां सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् न मम ॥१।।

ॐ सत्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्व नो वरुण रराणो वीहि मृडीक सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्निवरुणाभ्याम् न मम ।।२।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमयाऽअसि । अयानो । यज्ञ वहास्ययानो धेहि भेषज ँ्स्वाहा । इदमग्नये न मम ॥३।।

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता: महान्तः: । तेभिर्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का:: स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।।४।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्य श्रथाय । अथ वयमादित्यव्रते तवानागसोअदितये स्याम स्वाहा । इदं वरुणायादित्यायाऽदितये न मम ।।५।।

अत्रोदक स्पर्श इति पंचवारुणी अथवा प्रायश्चित होमः। पुनः जल स्पर्श करें । अनन्तर गणेशाम्बिका को वराहुति प्रदान करे।

वराहुति

विघ्नहर्ता भगवान् गणपति तथा देवी अम्बिकाके निमित्त दी गयी आहुति 'वराहुति' कहलाती है।

वराहुतिके मन्त्र इस प्रकार हैं-

गणपतिके लिये

ॐ गणानां त्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ग्वं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्-- स्वाहा।

अम्बिका के लिये

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः काम्पीलवासिनीम्।-- स्वाहा ॥

इस प्रकार प्रारम्भिक कार्यके अनन्तर प्रधान हवन करना चाहिये। आगेकी आहुतियाँ घी अथवा शाकल्य से दोनोंसे दी जा सकती हैं । शाकल्यकी आहुति मृगीमुद्रा से ग्रहणकर उत्तान हाथ से दी जाती है।

अथ नवग्रहाणां होम :

(ततो घृताक्त्का : समिधो जुहुयात्) 8, 28 अथवा 108 संख्या में तत्तद ग्रह समिधा से अग्नि में होम प्रदान करे । होमः हेतु घृताक्त ग्रह समिधाओं का प्रयोग करें

सूर्य -
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन स्वाहा : । इदं सूर्याय स्वाहा : ॥(**मंदार**)
सोम-
ॐ इमं देवा ऽअसपत्न सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्र स्यद्रियाय । इमममुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्र मस्यै विश एव वोऽमी राजासोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां राजा स्वाहा । इदं चन्द्राय स्व्हा : ॥(**पलाश**)
भौम-
ॐ अग्नि मूर्द्धा दिव : ककुत्पति : पृथिव्याऽअयम् । अपा रेता सि जिन्वति स्वाहा । इदं भौमाय स्वाहा : ॥**(खदिर या खैर)**

बुध- ॐ उदबुध्यस्वाग्रे प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवायजामानश्च , सीदत स्वाहा ।इदं बुधाय स्वाहा : ॥(**अपामार्ग या लटजीरा)**

बृहस्पति- ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाती क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा । इदं बृहस्पतये स्वाहा : **॥(अश्वत्थ या पीपल)**

शुक्र- ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पय : सोमप्रजापति : ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा । इदं शुक्राय स्वाहा : ॥ **(गूलर या उदुम्बर)**

शनि- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभि स्त्रवन्तु न : स्वाहा : । इदं शनैश्चराय : स्वाहा : ।(**शमी**)

राहु- ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृध : सखा । कया शचिष्ठया वृता स्वाहा । इदं राहवे स्वाहा : ।(**दूर्वा**)
केतु- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजायथा : । केतवे स्वाहा: ॥(**कुश**)

अथ अधि दैवाना होम :

ॐ त्र्यंबकाय नम : स्वाहा : । ॐ उमायै नम : स्वाहा : ।ॐ स्कन्दाय नम : स्वाहा : । ॐ विष्णवे नम : स्वाहा : । ॐ ब्रह्मणे नम : स्वाहा : । ॐ इन्द्राय नम : स्वाहा : ।ॐ यमाय नम : स्वाहा : । ॐ कालाय नम : स्वाहा :। ॐ चित्रगुप्ताय नम : स्वाहा : ।

अथ प्रत्यधिदेवतानां होम :

१ . ॐ अग्नये स्वाहा : ।२ . ॐ अद्भ्य : स्वाहा : ।३ . ॐ पृथिव्यै स्वाहा : । ४ . ॐ विष्णवे स्वाहा : । ५ . ॐ इन्द्राय स्वाहा : । ६ . ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा : । ७ . ॐ प्रजापतये स्वाहा : । ८ . ॐ सर्पेभ्य : स्वाहा : । ९ . ॐ ब्रह्मणे स्वाहा : ।

अथ षड्विनायकेभ्यो होम :

ॐ मोदाय नम : स्वाहा : । ॐ प्रमोदाय नम : स्वाहा : । ॐ सुमुखाय नम : स्वाहा : । ॐ दुर्मुखाय नम : स्वाहा : । ॐ अविघ्नाय नम : स्वाहा : । ॐ विघ्नहर्त्रे नम : स्वाहा : ।

अथ द्वादशविनायक होम:

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो । वातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो । गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो । विरुपेभ्यो विश्वरूपैभ्यश्च वो नमो नम : ॐ गणपतये नम : स्वाहा । मार्गशीर्ष - ॐ गणपतये नम : स्वाहा । पौषे - ॐ विनायकाय नम : स्वाहा । माघे - ॐ गजवक्त्राय नम : स्वाहा । फाल्गुने - ॐ भाल चन्द्राय नम : स्वाहा । चैत्रे - ॐ उपेन्द्राय नम : स्वाहा । वैशाखे - ॐ विघ्नविनाशाय नम : स्वाहा । ज्येष्ठे - ॐ शिव सुताय नम : स्वाहा । आषाढे - ॐ हरिनन्दनाय नम स्वाहा । श्रावणे - ॐ हेरम्बाय नम : स्वाहा । भाद्रपदे - ॐ लम्बोदराय नम : स्वाहा । आश्विने - ॐ कार्तवीर्याय नम : स्वाहा । कार्तिके - ॐ महावीर्याय नम : स्वाहा ।

॥ पंचलोक पाल देवता होम : ॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानंम्प्रथमं पुरस्ताद् द्विसी मत : सुरुचो व्वेन आव : सबुध्न्या उपमा अस्य

विष्ठा : सतश्च योनि मसतश्च विव : । **ॐ ब्रह्मणे नम : स्वाहा : ।**
ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो : श्नप्त्रेस्थो विष्णो : स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा । **ॐ विष्णवे नम : स्वाहा** : ।
ॐ नम : शंभवाय च मयो भवाय च नम : शंकराय च मयस्कराय च नम : शिवाय शिव तराय च । **ॐ शिवाय नम : स्वाहा** : ।
ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण , सर्वलोकम्मऽइषाण । **ॐ महालक्ष्म्यै नम : स्वाहा : ।**
ॐ पंच नद्य : सरस्वती मपि यन्ति सस्त्रो तस: सरस्वती पंचधा देशे भवत् सरित् । **ॐ सरस्वतै नम : स्वाहा : ।** इति पंचलोकपाल होम :

अथ षोडशमातृका होम :

ॐ गणेशाय नम : स्वाहा : । ॐ गौर्यै नम : स्वाहा : ।ॐ पद्मायै नम : स्वाहा : । ॐ शच्यै नम : स्वाहा : ।ॐ मेधां नम : स्वाहा : । ॐ सावित्र्यै नम : स्वाहा : ।ॐ विजयायै नम : स्वाहा : । ॐ जयायै नम : स्वाहा : ।ॐ देवसेनायै नम : स्वाहा : । ॐ स्वधायै नम : स्वाहा : ।ॐ स्वाहायै नम : स्वाहा : । ॐ मातृभ्यो : नम : स्वाहा : ।ॐ लोकमातृभ्यो नम : स्वाहा ।ॐ धृत्यै नम : स्वाहा : । ॐ पुष्ट्यै नम : स्वाहा: ।ॐ तुष्ट्यै नम : स्वाहा : । ॐ आत्मनः कुल देवतायै नम : स्वाहा : ।

अथ सप्तघृत मातृका होम :

श्री :-ॐ मनस : काममाकूतिं वाच : सत्यमसीमहि पशूना रूपमन्नस्य रसोयश : श्री श्रंयता मयि स्वाहा । ॐ श्रियै नम : स्वाहा : ।

लक्ष्मी :-ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण : । ॐ लक्ष्म्यै नम : स्वाहा : ।

धृति :-ॐ भद्रं कर्णोभि : श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा : । स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु : ॥ ॐ धृत्यै नम : स्वाहा : ।

मेधा :-ॐ मेधाम्ने वरुणोददातु मेधामग्नि :प्रजापति । मेधा मिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्द्याता ददातु में स्वाहा ॥ ॐ मेधाम् नम : स्वाहा ।

स्वाहा :-ॐ प्राणाय स्वाहा : ऽपानाय स्वाहा : व्यानाय स्वाहा , चक्षुसे स्वाहा: श्रोत्राय

स्वाहा :, वाचे स्वाहा , मनसे स्वाहा : । ॐ स्वाहायै नम : स्वाहा : ।

प्रज्ञा :-ॐ आयंगौ : प्रश्निरक्रमीद् सदन्मातरम्पुर : पितरंच प्रयन्त्स्व ॥ ॐ प्रज्ञायै नम : स्वाहा : ।

सरस्वतीः -ॐ पावकान : सरस्वतीवाजेमि र्वाजनीवति । यज्ञवष्टु धियावसु ॥ ॐ सरस्वत्यै नम : स्वाहा : ।

अथ पंचलोकपाल होम :

ॐ गणपतये स्वाहा : ।ॐ दुर्गायै स्वाहा : ।ॐ वायवे स्वाहा : ।ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा : ।ॐ अश्विभ्यां स्वाहा : ।

अथ वास्तु होम :

१ . ॐ शिखिने स्वाहा : ।२ . ॐ पर्जन्याय स्वाहा : ।३ . ॐ जयन्ताय स्वाहा : ।४ . ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा : ।५ . ॐ सूर्याय स्वाहा : ।६ . ॐ सत्याय स्वाहा : ।७ . ॐ भृशाय स्वाहा : ।८ . ॐ आकाशाय स्वाहा : ।९ . ॐ वायवे स्वाहा : ।१० . ॐ पूष्णे स्वाहा : ।११ . ॐ वितथाय स्वाहा : ।१२ . ॐ गृहक्षताय स्वाहा : ।१३ . ॐ यमाय स्वाहा : ।१४ . ॐ गन्धर्वाय स्वाहा : ।१५ . ॐ भृंगराजाय स्वाहा : ।१६ . ॐ मृगाय स्वाहा : ।१७ . ॐ पितृभ्य : स्वाहा : ।१८ . ॐ दौवारिकाय स्वाहा : ।१९ . ॐ सुग्रीवाय स्वाहा : ।२० . ॐ पुष्पदंताय स्वाहा : ।२१ . ॐ वरुणाय स्वाहा : ।२२ . ॐ असुराय स्वाहा : ।२३ . ॐ शोषाय : स्वाहा : ।२४ . ॐ पापाय स्वाहा : ।२५ . ॐ रोगाय स्वाहा : ।२६ . ॐ अहये स्वाहा : ।२७ . ॐ मुख्याय स्वाहा : ।२८ . ॐ भल्लाटाय स्वाहा : ।२९ . ॐ सोमाय स्वाहा : ।३० . ॐ सर्पाय स्वाहा : ।३१ . ॐ अदित्यै स्वाहा : ।३२ . ॐ दित्यै स्वाहा : ।३३ . ॐ अद्भ्य : स्वाहा : ।३४ . ॐ सवित्राय स्वाहा : ।३५ . ॐ जयाय स्वाहा : ।३६ . ॐ रुद्राय स्वाहा : ।३७ . ॐ अर्यम्णे स्वाहा : ।३८ . ॐ सवित्र स्वाहा : ।३९ . ॐ विवस्वते स्वाहा : ।४० . ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा : ।४१ . ॐ मित्राय स्वाहा : ।४२ . ॐ राज्ययक्ष्मणे स्वाहा : ।४३ . ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा : ।४४ . ॐ आपवत्साय स्वाहा : ।४५ . ॐ ब्रह्मणे स्वाहा : ।४६ . ॐ वरकयै स्वाहा : ।४७ . ॐ विदार्ये स्वाहा : ।४८ . ॐ पूतनायै स्वाहा : ।४९ . ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा : ।५० . ॐ पूर्वे स्कन्दाय स्वाहा : ।५१ . ॐ दक्षिणे अर्यम्णे स्वाहा : ।५२ . ॐ पश्चिमे जृम्भकाय स्वाहा : ।५३ . ॐ उत्तरे

पिलिपिच्छाय स्वाहा : ।५४ . ॐ पूर्वे इन्द्राय स्वाहा : ।५५ . ॐ आग्नेय्यां अग्नये स्वाहा : ।५६ . ॐ दक्षिणे यमाय स्वाहा : ।५७ . ॐ नैऋत्य नैऋतये स्वाहा : ।५८ . ॐ पश्चिमे वरुणाय स्वाहा : ।५९ . ॐ वायव्ये वायवे स्वाहा : ।६० . ॐ उत्तरे कुबेराय स्वाहा : ।६१ . ॐ ईशान्यां ईश्वराय स्वाहा : ।६२ . ॐ ब्रह्मणे स्वाहा : ।६३ . ॐ अनंताय स्वाहा : ।६४ . ॐ वास्तवे स्वाहा : । वास्तुपुरुषाय स्वाहा : ।
ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्य सर्वेभ्य : सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररुपेभ्य स्वाहा : । अघोराय स्वाहा : ॥।॥ इति वास्तुमण्डल देवतानां होम :

॥अथ सर्वतो भद्रे षट्पंचाशद् देवाना कृते होम :।।

१ . ॐ ब्रह्मणे स्वाहा : ।२ . ॐ सोमाय स्वाहा : ।३ . ॐ ईशानाय स्वाहा : ।४ . ॐ इन्द्राय स्वाहा : ।५ . ॐ अग्नये स्वाहा : ।६ . ॐ यमाय स्वाहा : ।७ . ॐ नैऋत्याय स्वाहा : ।८ . ॐ अरुणाय स्वाहा : ।९ . ॐ वायवे स्वाहा : ।१० . ॐ अष्टवसुभ्य : स्वाहा : ।११ . ॐ एकादश रुद्रेभ्य स्वाहा : ।१२ . ॐ द्वादशादित्येभ्य : स्वाहा : ।१३ . ॐ अश्विभ्यां स्वाहा : ।१४ . ॐ विश्वेदेवेभ्य स्वाहा : ।१५ . ॐ पितृभ्य : स्वाहा : ।१६ . ॐ भूतनागेभ्य स्वाहा : ।१७ . ॐ यज्ञेभ्य : स्वाहा : ।१८ . ॐ सर्पेभ्य : स्वाहा : ।१९ . ॐ गन्धर्वेभ्य : स्वाहा : ।२० . ॐ अप्सरोभ्य : स्वाहा : ।२१ . ॐ स्कन्दाय स्वाहा : ।२२ . ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा : ।२३ . ॐ शूलमहाकालाभ्यां स्वाहा : ।२४ . ॐ प्रजापतिभ्य : स्वाहा : ।२५ . ॐ दुर्गायै स्वाहा : ।२६ . ॐ विष्णवे स्वाहा : ।२७ . ॐ पितृभ्य : स्वाहा : ।२८ . ॐ मृत्युरोगेभ्य : स्वाहा : ।२९ . ॐ गणपतये स्वाहा : ।३० . ॐ अद्भ्य स्वाहा : ।३१ . ॐ मरुदभ्य : स्वाहा : ।३२ . ॐ पृथिव्यै स्वाहा : ।३३ . ॐ सरिद्भ्य : स्वाहा : ।३४ . ॐ सप्तसागरेभ्य : स्वाहा : ।३५ . ॐ मेरवे स्वाहा : ।३६ . ॐ गदायै स्वाहा : ।३७ . ॐ त्रिशूलाय स्वाहा : ।३८ . ॐ वज्राय स्वाहा : ।३९ . ॐ शक्तये स्वाहा : ।४० . ॐ दण्डाय स्वाहा : ।४१ . ॐ खड्गाय स्वाहा : ।४२ . ॐ पाशाय स्वाहा : ।४३ . ॐ अंकुशाय स्वाहा : ।४४ . ॐ गोतमाय स्वाहा : ।४५ . ॐ भारद्वाजाय स्वाहा : ।४६ . ॐ विश्वामित्राय स्वाहा : ।४७ . ॐ कश्यपाय स्वाहा : ।४८ . ॐ जमदग्नये स्वाहा : ।४९ . ॐ वशिष्ठाय स्वाहा : ।५० . ॐ अत्रये स्वाहा : ।५१ . ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा : ।५२ . ॐ ऐद्रयै स्वाहा : ।५३ . ॐ कौमार्ये स्वाहा : ।५४ . ॐ ब्राह्मयै स्वाहा : ।५५ . ॐ वारह्यै स्वाहा : ।५६ . ॐ चामुण्डायै स्वाहा : ।५७ . ॐ वैष्णयै स्वाहा : ।५८ . ॐ माहेश्वर्ये स्वाहा : ।५९ . ॐ वैनायिक्यै स्वाहा : ।६० . ॐ इन्द्रादि लोकपालेभ्य : स्वाहा : ।॥ इति सर्वतोभद्र मण्डल देवतानां होम : ॥

प्रधान देवता होमः

अब प्रधान देवता हेतु शाकल्य और घृत से यथोक्त संख्या में आहुति प्रदान करे

स्विष्टकृत आहुति

ॐ भू स्वाहा , इदमऽग्नये , इदमग्नये न मम् ।
ॐ भुव : स्वाहा , इदमवायवे , इदमग्नये न मम् ।
ॐ स्व : सूर्याय इदं सूर्याय न मम् ।
ततो ।

ॐ त्वन्नो अग्ने इति पंचवारुणीहोमवत् ॥(पंच वारुणी होम पुनः करें।)
ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम॥

ग्रह बलिदान

संकल्प

सूर्यादि नवग्रहेभ्य : सांगेभ्य : सपरिवारेभ्य : सायुधेभ्य : सशक्तकेभ्य : अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पंचलोकपाल वाष्तोष्पति सहितेभ्य : एतं सदीपमाषभक्त बलिंसमर्पयामि ॥

प्रार्थना

भो भो : सूर्यादिग्रहा : सांगा : सपरिवारा : सायूधा : सशक्तिका : अधिदेवता प्रत्यधिदेवता :- गणपत्यादि पंचलोकपल - वास्तोष्पति सहिता : मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु : कर्तार : क्षेमकर्तार : शांति कर्तार : पुष्टिकर्तारो वरदा भवेत् । अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहादय : प्रीयन्ताम् ।

दिक्पाल बलिदानम्

अथ दशदिक्पालादीनां बलिदानम् तद्यथा

पूर्वे इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि । भो इन्द्र दिशंरक्ष बलिंभक्ष अस्य सकुटुम्बस्य : यजमानस्य :आयु : कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्तां पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥१॥

आग्नेय्यां अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधि माषभक्त बलिं समर्पयामि । भौ अग्ने दिशंरक्ष बलिंभक्ष यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्त्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥२॥

दक्षिणे यमाय सांगाय सपरिवाराय सासुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि । भो यम दिशंरक्ष बलिंभक्ष यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्ता क्षेमकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥३॥

नैऋत्या , निऋतये सांगांय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि । भो निऋते दिशं रक्ष बलिंभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टि वरदोभव ॥४॥

पश्चिमायां वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि । भो वरुण दिशंरक्ष बलिंभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥५॥

वायव्यां , वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि । भो वायो दिशंरक्ष बलिंभक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्त्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥६॥

उत्तरस्यां कुबेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो : कुबेर दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥७॥

ऐशान्या मीशानाय सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥८॥

ईशान पूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दक्षिमाषभक्त बलिं समर्पयामि भो ब्रह्मन दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य

सकुटुम्बस्य आयुकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव ॥९॥

निऋति पश्चिमयोर्मध्ये , अंनताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं संदीपं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि । भो अनंत दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयु : कर्त्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ॥१०॥
॥ इति दशदिक्पाल बलि : ॥

अथ क्षेत्रपाल बलि:

एक मिट्टी का बडा दीपक (सराई) लेकर उसमें चार मुंह की ज्योत लगावें । दीपक में सरसों कातेल डालें . उसमें सिन्दूर , उडद , पापड , दही , गुड , सुपारी आदिरखकर दीप प्रज्वलित करें और क्षेत्रपाल का आवाहन करें ।

ॐ क्षेत्रपालाय शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत बेताल पिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि । भो क्षेत्रपाल : दिशो रक्ष बलिं भक्ष मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु : कर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव : ।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ ।
ॐ क्षेत्रपालाय नम : । इति पंचोपचारै : संपूज्य ।

प्रार्थयेत्-

ॐ नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेत , गणै : सह ।
पूजाबलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा ॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि में ।
देहि में आयुरारोग्यं निर्विघ्नं कुरु सर्वदा न : ॥

अब इस दीपक को उठाकर यजमान की तरफ आवृत कर बिना पीछे मुडे बाहर दीपक को चौराहे पर रखावें । ब्राह्मण शांतिपाठ करें। ब्रह्मा जी द्वार तक जल छोडें दीपक को रखकर आने वाला व्यक्ति नहाकर या हाथ पैर धोकर आवे ।

पूर्णाहुति

स्रुवे से नारियल के गोले में घी भरकर रोली , मोली लगाकर उस पर एक सुपारी रख देवे

। नारियल के मुख को सम्मुख करके पूर्णाहुति देवें ।

पहले " पूर्णाहुत्यां **मृडनाम्ने** वैश्वानराय " इदं गन्द्य, पुष्पं , धूपं नैवेद्यं आचमनीय से पंचोपचार पूजन करें । पीछे " एकोनपंचाशद् मरुद्गणेभ्यो नम : " से नारियल पर मरुद्गणों की पूजा करें । फिर विनियोग करके पूर्णाहुति मन्त्रों से पूर्णाहुति करें ।

विनियोग
ॐ मूर्द्धान मिति मन्त्रस्य भारद्वाज ऋषि : वैश्वानरोदेवता त्रिष्टुप् छन्द : पूर्णाहुति होमे विनियोग : ।

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्रिम् । कवि ठ साम्राज्यमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देव : ॥१॥
पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूज् शतक्रतो ॥२॥
चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवाऽइहा गमन्वीतिहोत्राऽऋतावृध : ॥ पत्ये विश्वस्यभूमनो जुहोमि विश्वकर्मणे व्विश्वाहादाभ्यं हवि : ॥३॥
सप्तते अग्ने समिध : सप्त जिह्वा : सप्तऋषय : सप्त धाम प्रियाणि । सप्तहोत्रा : त्वा यजंति सप्त योनिरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥४॥
शुक्र ज्योतिश्च चित्र ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य स्वाहा : ॥५॥ईद्दड् चान्यादृड च ददृङ् प्रतिसदृङ् च । मितश्च संमितश्च सभरा : ॥६॥
ऋतश्च सत्यश्च , ध्रुवश्च , धरुणश्च । धर्ता च विधर्ता च व्विधारय : ॥७॥
ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च । अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गण : ॥८॥
ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽउ षु ण : सदृक्षास : प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च सम्मितासो नोऽअद्य सभरसोमरुतो यज्ञेऽअस्मिन् ॥९॥
स्वतवांश्च प्रघासी च सांतपनश्च गृहमेधी च । क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥१०॥
उग्रश्च , भीमश्च ध्वांतश्य धुनिश्च । सासह्यांश्चाभि युग्वा च विक्षिप : स्वाहा ॥११॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसव : समिंधतां पुनर्ब्रह्माणो, वसुनीथ यज्ञै : घृतेन त्वं तन्वं व्वर्द्धयस्व सत्या : संतु यजमानस्य कामा : ॥१२॥ **पूर्णांहुतिं** कुर्यात् ॥

वसोर्द्धारा होम

इसी प्रकार पूर्णांहुति करके घृत (घी) की धारा देवें ।
ॐ वसो : पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि सहस्त्रधारं । देवस्त्वा सविता पुनातु वसो : पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष : स्वाहा ॥
ॐ सप्तते अग्ने समिध : सप्तजिह्वा : सप्तऋषय : सप्तधाम - प्रियाणि सप्तहोत्रा :

सप्तधात्व यजन्ति सप्तयोनि रापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥

स्त्रुक् शेषं पश्चात् रुद्र कलशे त्यजेत् । इममिन्द्राय न मम् ।

अग्नि की प्रदक्षिणा करें । फिर प्रार्थना करें ।

प्रार्थना

त्राहिमाम् पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम् ।
कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ॥१॥
अकाल कलुषं चित्तं मम ते पादयो : स्थितम् ।
कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्म सुकेवलम् ॥२॥
ॐ श्रृद्धां मेधां यश : प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियंबलम् ।
तेज आयुष्म मारोग्यं देहि में हव्यवाहन ॥
भोभो अग्ने ! महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधन ।
कर्मान्तरे ऽपि सम्प्राप्ते सानिध्यं कुरु सर्वदा ॥

भस्मधारण

ललाट , गले , बाहु , ह्रदय में लगानी चाहिए ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति- **ललाटे** ।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति- **ग्रीवायाम** ।
ॐ यद्देवेषु त्रयायुषमिति- बाहुमूले ।
ॐ तन्नो अस्तु त्रयायुषमिति- **हृदि** ।

ततोऽग्न्युपस्थानम् पुनः वैश्वानर या अग्नि का अभिवादन करे।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥
कायेन वाचा मन्सेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वानुसृतस्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्मं प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णो : सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

ॐ यज्ञपुरुषाय नम : ।

इसके बाद **आरती , पुष्पाञ्जलि प्रदक्षिणा , नमस्कार क**रें ।

संश्रवप्राशनम्

वह घी जिसका प्रोक्षणी में त्याग किया था उसको सूघें ।

पूर्णपात्रदानम्

चार पूर्णपात्र - **एक घी का पात्र ,दूसरा शक्कर का पात्र , तीसरा चावल का पात्र , चौथा तिल का पात्र** इन सब में दक्षिणा व यज्ञोपवीत रखकर संकल्प करके एक पात्र ब्रह्माजी को , दूसरा आचार्य महोदय को , तीसरा व चौथा अन्य ब्राह्मणों को दें ।

ब्रह्मग्रन्थि- विमोक :

(तया दर्भया प्रणिता पात्र जलेन निम्न मन्त्रेण शिरोमार्जनम् ।)
दर्भ से प्रणितापात्र के जल से शिर मार्जन करें । पुनः अब स्थापित कुश ब्रह्म की गाँठ खोल देवें ।

उत्तर पूजन

अब यथोक्त यथा सम्भव उपचार से सब देवताओं का उत्तर पूजन कर ।

(तत : सर्वेषामुत्तरपूजनं कुर्यांता ततो)

प्रणीत पात्र का न्युब्जीकरण (प्रणीता पात्र को पलटना)

यथा - " ॐ सुमित्रिया न आप ओषधय : सन्तु का पाठ करते हुए दर्भ से शिरो मार्जन करते हुए प्रणीता को पलट या औंधा कर दें।

"प्रणिता को ओंधा करने का मंत्र- ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियं च वयं द्विष्म : ॥

(ईशान्यां प्रणीतायां द्विष्म : ॥ ईशान्यां प्रणीतायां न्युब्जीकरणम् ॥
पवित्रेऽग्नौ क्षिपेत् ॥ अग्नेऽर्घ्यत्रयं तेन नयन स्पर्श : ।)

यह मन्त्र बोलकर ईशान कोण में प्रणितापात्र को ओंधा कर दें ।

और पवित्रियों को अग्नि में डाल दें । अग्नि को तीन बार अर्घ्य देकर उस जल से नेत्र स्पर्श करें ।

बर्हिहोम :

(तत् आस्तरण क्रमेण बर्हिरुत्थाप्य आज्ययुक्तं कृत्वा हस्तेनैव निम्न मन्त्रेण जुहूयात्)

। जिस प्रकार वेदी के चारों ओर बर्हि (कुशाएं) बिछाई थी उन्हें उस क्रम से उठाकर घृत में भिगोकर मन्त्र द्वारा हाथ से ही होम देवें ।
ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गतुमित । मनसस्पत इमं देवयज्ञ स्वाहा वातेधा : स्वाहा ॥

दक्षिणा दान तथा आशीर्वाद :

अक्षतान् विप्र हस्तान्तु नित्यं गृहणन्ति : ये नरा : ।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयु कीर्ति यशो बलम् ॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यं गावधात् पवमानं महीयते।
धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरे दीर्घमायु ।
मन्त्रार्था : सफला सन्तु पूर्णा : सन्तु मनोरथा : ।
शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणां मुदयस्तव ॥

दक्षिणा दान संकल्प

पश्चात् आचार्यादि ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे एतदर्थं संकल्प पढें ।

पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्टे अमुक संवत्सरेऽमुकमासे ऽमुक पक्षे ऽमुक तिथौ च ऽमुकगोत्रोत्पन्नो ऽमुकनामाहं अमुक शान्ति ....कर्मणि सफलता प्राप्त्यर्थं आचार्याय , ब्रह्मकर्म कर्त्रे अन्येभ्यश्चापि विप्रेभ्य : ससम्मान दक्षिणां दक्षिणां , भूयसीं च सम्प्रददे ॥

ब्राह्मण भोजन

इसके पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करावें । आशीर्वाद प्राप्त करें ।

इसके अनन्तर यजमान पत्नी यजमान के वाम भाग में बैठे । प्रधान कलश और रुद्र कलश के जल से दोनों का आचार्य गण मन्त्र पाठ पूर्वक अभिषेक करें । **(पश्चात् यजमानस्य पत्नी तस्य वांमागे उपविशेत् । प्रधानकलश रुद्र कलश जलेन तयोरभिषेकं कुर्यात् ।)**

अभिषेक : मन्त्रा :

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा : स्वस्ति न : पूषा विश्व वेदा : । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु : ॥१॥

ॐ पय : पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा : । पयस्वती प्रदिश : सन्तु मह्यम ॥२॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो : श्नप्त्रेस्थो विष्णो : स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा ॥३॥

ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता । वसवो देवता रुद्रादेवता ऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पति र्देवतेन्द्रो देवता ,वरुणो देवता ॥४॥

ॐ धौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति : पृथिवी शान्तिराप : शान्तिरोषदय : शान्ति : वनस्पत्तय शान्ति र्विश्वेदेवा : शान्ति र्ब्रह्म शान्ति : सर्व शान्ति : शान्तिरेव शान्ति : सा मा शान्तिरेधि ॥५॥

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे । यो व : शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न : । उशतीरिव मातर : । तस्मा अरंङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च न : ॥

शान्तिरस्तु । पुष्टिरस्तु । तुष्टिरस्तु ।वृद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्ममस्तु । शिवमस्तु । शिव कर्मास्तु । कर्मसमृद्धिरस्तु । धर्म समृद्धिरस्तु । वेद समृद्धिरस्तु । शास्त्र समृद्धिरस्तु । पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु । धन धान्य समृद्धिरस्तु ।

(**अब जल का भूमि पर त्याग करें**)अनिष्ट निरसनमस्तु यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तत्पतिहतमस्तु ।

फिर दोनों (दम्पत्ति) के हाथों पर छीटें दें - राज्य द्वारे गृहे सुख शांन्तिर्भवतु , श्रीरस्तु , कल्याणमस्तु । ॐ शान्ति : शान्ति : शान्ति : ।

इसके पश्चात् देवताओं का विसर्जन करें तत्पश्चात् विद्वज्जन यजमान को आशीर्वाद देवें ।

विसर्जन

गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठा : स्वस्थाने परमेश्वरा : ।
यजमान हितार्थाय पुनरागमनाय च ॥

पुनः आशीर्वाद :

अक्षतान् विप्र हस्तान्तु नित्यं गृहणन्ति : ये नरा : ।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयु कीर्ति यशो बलम् ॥
श्रीर्वर्चस्व मायुष्यमारोग्यंमावधात् पवमानं महीयते।
धन धान्यं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसंवत्सरे दीर्घमायु ।
मन्त्रार्था : सफला सन्तु पूर्णा : सन्तु मनोरथा : ।
शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणां मुदयस्तव ॥

पाद टिप्पणी तथा संदर्भ

---

१. कुशकण्डिकाविधानका मूल इस प्रकार है-
परिसमुह्योपलिप्योल्लिख्योद्धृत्याभ्युक्ष्याग्निमुपसमाधाय दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य प्राणीय परिस्तीर्यार्थवदासाद्य पवित्रे कृत्वा प्रोक्षणी: संस्कृत्यार्थवप्रोक्ष्य निरुप्याज्यमधिश्रित्य पर्यग्नि कुर्यात् ॥ स्रुवं प्रतप्य सम्मृज्याभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य निदध्यात्॥ आज्यमुद्वास्योत्पूयावेक्ष्य प्रोक्षणीश्च पूर्ववदुपयमनान्कुशानादाय समिधोऽभ्याधाय पर्युक्ष्य जुहुयात् (पारस्करगृह्य सूत्र १/१/२-४)
२.उत्तानेन तु हस्तेन प्रोक्षणं समुदाहृतम् । तिरश्चावोक्षणं प्रोक्तं नीचेनाभ्युक्षणं स्मृतम् ।।

**३ -	पञ्चाशत्शकुशको ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टर: ।**
ऊर्ध्वकेशो भवेद ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टर: ॥
दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टर: । (विधानपारिजात)

४. अग्नेरुत्तरत: प्रणीतासनद्वयम्।

५. प्रणीतापात्र: पुरत:कृत्वा जलेन प्रपूर्य।

६. कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्।

७. परिस्तरणके बिना वेदी तथा अग्निपत्नी स्वाहादेवी नग्न मानी जाती हैं। इसी नग्नताको दूर करनेके लिये कुशद्वारा परिस्तरण किया जाता है-
वेदिका दर्भहीना तु विनग्ना प्रोच्यते बुधैः ।
परिधानं तत: कुर्या दर्भेणैव विशेषत: (कारिका

८. इतने कुश न मिलें तो तेरह कुशोंको ग्रहण चाहिये उनके तीन तीन के चार भाग करे । कुशों के सर्वथा अभाव में दूर्वा से भी क्रिया सम्पन्न की जा सकती है।

९. प्रागग्रयोद्योरुपरि उदगग्राणि निधाय उपरि प्रादेशमात्रमवशेषयित्वा अधोभागे द्वयोर्मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य एकीकृत्य छेदयेत् अधोभागे द्वयोप्लेन प्रदक्षिणीकृत्य एकीकृत्य छेदयेत् ता नुत्तरत: प्रक्षिपेत्। (कर्मकाण्डप्रदीप)

१०. यदि दो चरु बनाने हों और चरुके लिये दो पात्र हों तो अलग अलग बनाये। पितृकर्मगत वृषोत्सर्गमें दो चरुपाक बनते हैं। (पिष्टिचर तथा पायस-चरु)

११. सकृत् पित्र्ये तु तण्डुला: । पितृकार्यमें एक बार धोना चाहिये।

१२. प्रमाणके रूपमें 'सामविधान ब्राह्मण के प्रथम खण्डके प्रथम अध्यायका वचन उद्धृत किया जा रहा है'ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् "तस्य तेजो रसोऽत्यरिच्यत्' 'स ब्रह्मा अभवत्' 'स तुष्णीं मनसा ध्यायत्' 'तस्य यन्मन आसीत् "स प्रजापतिरभवत' 'तस्मात् प्राजापत्यं मनसा जुह्वति' 'मनो हि प्रजापति:'।